B.Ed. IInd Year 2020 (1)

Paper Name:- WORK Education, Gandhiji's Nai Talim and Community Engagement

Paper code XII E-304 CC8

Unit-I

DR. K. C. GAUR
Head (Faculty of Education)

Work and Education:
Meaning and concept of work

कार्य व शिक्षा:-

आधुनिक युग में शिक्षा को रोजगार से जोड़कर देखा जाता है। शिक्षा प्राप्त करने करने के बाद व्यक्ति सरकारी या निजी (प्राईवेट) संस्थान में नौकरी प्राप्त करने का प्रयास करता है। महात्मा गांधी ने शिक्षा के माध्यम से क्रांतिकारी बदलाव लाने पर जोर दिया है। उनका मानना था कि दिमाग को हाथों के जरिए शिक्षित किया जाना चाहिए। आज की शिक्षा मुख्य रूप से पुस्तकीय ज्ञान देने का कार्य करती है। पुस्तकीय ज्ञान किसी भी बालक की पांचों इन्द्रियों को विकसित करने में सक्षम नहीं है। यह शिक्षा बालक को श्रम तथा सामाजिकता से दूर कर रही है। आज अक्सर अभिभावकों से यह सुनने को मिलता है कि स्कूल से आने के बाद पढ़ने वाले बालक खेतों में काम करना पसन्द नहीं करते तथा खेती से सम्बन्धित कार्यों की उपेक्षा करते हैं। वर्तमान में विद्यालय भी कार्य व शिक्षा के बीच अन्तर को बढ़ा रहे हैं। कार्य के द्वारा बालक न केवल व्यापक जानकारी प्राप्त करता है, बल्कि ऐसी स्थितियां उन्हें प्राप्त होती हैं जहां से बहुत कुछ सीखते हैं। अपनी शंकाओं का समाधान करते हैं तथा अपनी ज्ञान रूपी पिपासा को शान्त करने का प्रयास करते हैं। आज विश्व में कार्य तथा शिक्षा के विचार को विभिन्न योजनाओं के जरिए प्रयोग में लाया जा रहा है। शिक्षा में 'कार्य से जुड़ी शिक्षा' की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

P.T.O

Scanned with CamScanner

अधिकांश शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवार में वयस्क लोग पढ़ने वाले बच्चों से घरेलू कार्यों में मदद मांगते हैं तथा अभिभावकों की मदद करने को उनका सामाजिक कर्तव्य माना जाता है। 6-14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों को सार्वभौमिक शिक्षा दिये जाने से सम्बन्धित किसी भी कार्य में विभिन्न समुदायों के घरों व विद्यालयों को प्रभावित करने वाली स्थानीय स्थितियां जैसे – परम्परागत व्यवसाय, लैंगिक भूमिकाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। जबतक कार्य व शिक्षा को अलग-अलग देखा जायेगा तब तक ये समस्यायें बनी रहेंगी। बाल मजदूर, स्कूल से निकाले गये या स्वयं विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों तथा स्कूल के साथ घर की जिम्मेदारियां निभाने में सक्षम बच्चों के उदाहरण मिल जायेंगे। हमारे परिवेश में काम के बिना बचपन स्वीकार नहीं है। वस्तुत: बचपन सामाजिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है, कोई तैयारी करने का पड़ाव नहीं है। बच्चों के सीखने-अनुभव करने को बच्चों, अभिभावकों एवं राज्य के मध्य उपस्थित जटिल राजनीतिक तनाव के रूप में समझा जाना चाहिए। आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों के बालकों को कार्य करने से जो ज्ञान, मूल्य और कौशल प्राप्त होते हैं, वे उन्हें इन अवसरों से वंचित बालकों से आगे ले जाते हैं। शिक्षा के योजनाकारों के समक्ष यह चुनौती होगी कि वे कमजोर तबके के बच्चों को गरिमा, आत्मविश्वास और शक्ति के साथ विद्यालय में भाग लेने में सक्षम बनाते हुए उनको इस प्रायोगिक पृष्ठभूमि का उनके फायदे में बदल दें। कार्य को पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में पेश करके, सामुदायिक संसाधनों के उपयोग से शिक्षा को सार्थक बनाने के साथ-साथ बालकों को ऐसे ज्ञान एवं कौशल से युक्त करना संभव हो जायेगा, जो उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने अथवा रोजगार पाने में मदद करेंगे।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कोठारी आयोग (1964-66) में कहा गया था कि हर बेहतर और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा न्यूनतम चार बुनियादी तत्व होते हैं :-

1. 'साक्षरता' — यानि कि भाषाओं का अध्ययन, मानविकी और सामाजिक अध्ययन।
2. 'संख्यात्मकता' — यानि गणित एवं प्राकृतिक विज्ञान का अध्ययन।
3. कार्यानुभव।
4. सामाजिक अनुभव।

इस प्रकार कोठारी कमीशन का स्पष्ट कथन है कि कार्यानुभव शिक्षा व कौशल को एकीकृत करने का एक तरीका है। यह युवाओं को रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो सकती है। यह छात्रों में उत्पादक प्रक्रियाओं और विज्ञान के प्रयोग में अन्तर्दृष्टि पैदा करने में कठिन एवं जिम्मेदारी वाले कार्य की आदत विकसित करता है। ऐसा करने द्वारा राष्ट्रीय उत्पादकता को बढ़ाने में योगदान दे सकते हैं, और इस प्रकार व्यक्ति व समाज के बीच सम्बन्ध मजबूत हो सकता है। साथ ही कार्य अनुभव शिक्षित व्यक्तियों और आम जनता के बीच सम्बन्ध बनाकर सामाजिक और राष्ट्रीय एकीकरण में मदद कर सकता है।

वर्ष 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 6 कार्य की शैक्षिक भूमिका' के बारे में बात करने के बजाय छात्रों के 'कार्यबल में प्रवेश' पर बल देती है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा के पूर्व के पाठ्यक्रम पर अधिक बल दिया गया है। यहां 'कार्यानुभव' केवल व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के निर्माण के लिए ही है। यह श्रम कार्य-शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को समानता देने की व्यापक प्रवृत्ति की वजह से है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कार्य-शिक्षा का अर्थ

(Meaning of Work Education)

कार्य + शिक्षा, शिक्षा की एक विधि है, जिसमें -दस्ता में शिक्षा देने के साथ-साथ बच्चों के समाजोपयोगी कार्यों की व्यावहारिक शिक्षा भी प्रदान की जाती है। कार्य से तात्पर्य किसी क्रिया को करने से है। 'क्रिया जनकत्वं कार्यं' अर्थात क्रिया से उत्पन्न होने वाले कर्म को ही कार्य कहते हैं। किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए जिस प्रक्रिया से गुजरा जाता है उस प्रक्रिया के कार्य कहते हैं। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए यहाँ कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत किए जा रहे हैं।-

आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार:- "शिक्षा के साथ शारीरिक व मानसिक परिश्रम को इस प्रकार जोड़ने की प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति, समाज या समुदाय के लिए किसी उपयोगी वस्तु या सेवा का सृजन हो सके वह कार्य कहलाता है।"1.

महात्मा गांधी के अनुसार:- "सम्पूर्ण ज्ञान अभी तक हमने बच्चों के मन में पुस्तकीय ज्ञान से ही भरा है तथा उनको प्रेरणा देने वाली बात अभी तक नहीं सोची है।" 2.

मनुस्मृति के अनुसार:- "कार्य करने वाले सदा ही निर्मल होते हैं।"3

रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार— "यदि हम बालकों का विकास करना चाहते हैं तो हमें नई शिक्षा योजना में हस्तशिल्प कार्य को विशेष महत्व देना चाहिए जिससे अच्छे शिल्पशास्त्रियों का निर्माण हो सके।"4

ईश्वरभाई पटेल के अनुसार:- "कार्य शिक्षार्थी और समुदाय की आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित उद्देश्य अर्थपूर्ण हस्तकार्य है जिसका परिणाम किसी वस्तु का निर्माण अथवा सेवा कार्य के रूप में है जो समुदाय के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इसे केवल यांत्रिक ढंग से ही न किया जाये वरन इनमें योजना-निर्माण, विश्लेषण एवं विस्तृत तैयारी का भी समावेश किया जाये।"5

---

1. आक्सफोर्ड डिक्शनरी। 2. महात्मा गांधी। 3. मनुस्मृति।
4. रवीन्द्रनाथ टैगोर। 5. ईश्वरभाई पटेल।

Scanned with CamScanner